उत्तर भारत में स्ट्रॉबेरी की खेती
कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 121–123

उत्तर भारत में स्ट्रॉबेरी की खेती

अमृत कुमार सिंह[1] , डॉ. नरेंद्र रघुबंसी[2] एवं डॉ. नवीन कुमार सिंह[3]
[1]शोध छात्र (उद्यान विज्ञान), कृषि विज्ञान विभाग,
इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
[2](वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख –(पशु विज्ञान) ज्ञ.ट.ज्ञ. कल्लीपुर वाराणसी
[3](वैज्ञानिक) पौधा संरक्षण– ज्ञ.ट.ज्ञ. कल्लीपुर वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: ankursingh792@gmail.com

स्ट्रॉबेरी एक शाकीय, छोटा, कोमल तथा बहुवर्षीय पौधा है जिसका वानस्पतिक नाम फ्रेगेरिया अननासा है। यह रोजेसी कुल का सदस्य है। स्ट्रॉबेरी के फल मध्यम आकार (10 से 15 ग्राम), चित्ताकर्षक, सुवासयुक्त और सिंदूरी रंग लिए हुए बहुत ही नरम बड़े लुभावने रसीले एवं पौष्टिक होते हैं। इनका खाने योग्य भाग लगभग 98 प्रतिशत है। इसमें विटामिन–सी तथा लौह तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। यह अन्य फल वाली फसलों की तुलना में अल्पावधि (3 से 4 महीने) में ज्यादा मुनाफा देती है। प्राइसके हर एक क्षेत्र की भिन्न–भिन्न जलवायु है जो सभी फसलों को एक समान सभी जगहों पर उगाने की अनुमति नहीं देती है। इसी कारण से कई ऐसी फसलें हैं. जो किसानों को अधिक मुनाफा प्रदान करने वाली होते हुए भी उनकी खेती नहीं की जा सकती है।

भारत में कुछ वर्षों पूर्व तक स्ट्रॉबेरी की खेती केवल ठन्डे प्रदेशों व पहाड़ी क्षेत्रों तक ही सीमित थी। परन्तु निरंतर रूप से होने वाले शोधों एवं सुधारों से, आज अधिक उपज देने वाली विभिन्न किस्में, तकनीकी ज्ञान, परिवहन, शीतभण्डार और प्रसंस्करण व परिरक्षण की जानकारी होने से स्ट्रॉबेरी की खेती लाभप्रद व्यवसाय बनती जा रही है।

इसका उपयोग कई मूल्य संवर्धित उत्पादों जैसे आईसक्रीम, जैम, जेली, कैंडी, केक इत्यादि बनाने के लिए भी किया जाता है। उपयुक्त लाभों को देखकर तथा वर्तमान में नई उन्नत प्रजातियों के विकास से इसको उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में भी सफलतापूर्वक उगाया जाने लगा है। इसी का नतीजा है कि स्ट्रॉबेरी जैसी फसल ठंडे प्रदेशों के अलावा अब गर्म प्रदेशों में भी किसानों को बम्पर मुनाफा दे रही है। प्रायः अधिक से अधिक लाभ के लिए उचित पद्धति से खेती की जानकारी अत्यंत आवश्यक होती. है. जो आगे वर्णित है

उपयुक्त जलवायु :

मैदानी क्षेत्रों में सिर्फ सर्दियों में ही इसकी एक फसल ली जा सकती है। यह कम प्रकाश अवधि वाला पौधा है। इसमें पुष्पण प्रारंभ होने के लिए लगभग 10 दिनों तक 8 घंटे से कम प्रकाश अवधि की जरूरत होती है। पौधों की अच्छी बढ़वार के लिए दिन का अधिकतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और रात का तापमान 7 से 13 डिग्री सेल्सियस उपयुक्त माना गया है. जो कि

अक्टूबर–नवम्बर में उपलब्ध होता है। इसी समय रनर या स्टोलन को जिन्हें शीतोष्ण क्षेत्रों से मँगा कर लगाया जाता है। जाड़े में पौधों की निष्क्रियता के कारण बढ़वार नहीं होती है परन्तु न्यून तापमान अवस्था पौधों की प्रसुप्तावस्था को तोड़ने में बहुत ही सहायक होती हैं। जैसे ही तापमान बढ़ता है पुष्पण प्रारम्भ हो जाता है। यहाँ फल फरवरी–मार्च में तैयार हो जाते हैं।

स्ट्रॉबेरी के लिए भूमि का चुनाव:

स्ट्रॉबेरी की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है परन्तु यह अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. मान 5.5 से 6.5 हो तथा जिसमें उच्च जैविक कार्बन हो, उपयुक्त होती है। उच्च जैविक कार्बन वाली हल्की मृदा रनर बनाने के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। लवणीय मृदा तथा जिसमें सूत्रकृमि उपस्थित हों, स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए अनुपयुक्त होती है।

खाद व उर्वरक:–

उर्वरकों को मात्रा ग्राम एकड़/दिन:

समय	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
10 अक्तूबर से 20 नवम्बर	250	200	400
21 नवम्बर से 20 दिसम्बर	600	200	600
21 दिसम्बर से 20 जनवरी	250	160	600
21 जनवरी से 28 फरवरी	700	200	900
1 मार्च से 31 मार्च	600	200	900

पौधा लगाने का समय:

आमतौर पर स्ट्रॉबेरी का प्रवर्धन रनर (लता को पकड़ने वाली नोंक) या स्टोलन के द्वारा किया जाता है। स्ट्रॉबेरी का पौधा लगाने का समय कृषि जलवायु क्षेत्र के अनुसार अलग– अलग होता है। प्रायः उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में इसकी रोपाई सितम्बर–अक्टूबर माह में करते हैं, परन्तु अधिक तापमान होने पर थोड़ी देर से रोपाई करनी चाहिए। पौधों को सूखने से बचाने के लिए रोपाई दिन के ठंडे समय में करनी चाहिए।

स्ट्रॉबेरी के लिए खेत की तैयारी एवं पलवार बिछाना

स्ट्रॉबेरी के पौधे लगाने से 20–25 दिनों पूर्व भूमि की दो से तीन बार अच्छी तरीके से जुताई करने के पश्चात 50–80 टन प्रति हैक्टर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद को मिट्टी में मिला देते हैं। फॉस्फोरस की पूरी मात्रा को भी मिट्टी की अंतिम तैयारी के समय मिला देते हैं। मैदानी क्षेत्रों में स्ट्रॉबेरी की खेती 60–75 सेंमी. चौड़ाई वाली लम्बी तथा 25 सेंमी. ऊंची क्यारियाँ बनाकर, जिसमें दो कतारें लगाई जा सकें, की जाती हैं। पौध की रोपाई किस्मानुसार पक्तियों में 25 सेंमी. से लेकर 60 सेंमी. तथा पौध से पौध की दूरी 30 सेमी. से 40 सेमी. रखनी चाहिए जिससे अछि पैदार हो और पौधों का विकाश व अच्छा होता है।

स्ट्रॉबेरी की उन्नत किस्में:

भारत में स्ट्रॉबेरी की खेती शीतोष्ण क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जाती है। परंतु डेस्कटॉप स्ट्रॉबेरी की उन्नत किस्में भारत के विभिन्न भागों में उगाने के लिए स्ट्राबेरी की बहुत सी उन्नत किस्में एन आर राउंड हैड, रैड कोट, कंटराई, चांडलर, स्वीट चार्ली, पजारो, सेल्वा, टडोगा, टोरे, विन्टर डक्कन, लोरिना, कैमा रोजा, डागलस, बेलरूबी, दाना तथा ईटना इत्यादि हैं। इनमें अच्छा आकार टोरे तथा एन आर राउंड

हैड का ही है। जिनके फल का वजन 4–5 ग्राम होता है। व्यावसायिक रूप से खेती करने के लिए प्रमुख किस्में निम्नलिखित हैं–ओफ्रा कमारोसा, चांडलर, स्वीट चार्ली, ब्लैक मोर, एलिस्ता, सिसकेफ, फेयर फाक्स आदि । उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र के लिए चांडलर सबसे उपयुक्त किस्म है। इसके फल 15–20 ग्राम के होते हैं तथा इनमें शर्करा की मात्रा 6.1 प्रतिशत होने के साथ–साथ ही यह वर्षा से होने वाली शारीरिक चोट से प्रतिरोधी और विषाणु के प्रति सहनशील होते हैं। इसको खाने के साथ–साथ प्रसंस्करित भी किया जा सकता है। ।। सामान्यतया इसकी उपज 200–500 ग्राम प्रति पौधा मिल जाती है। उन्नत किस्मों के विकास से इसको अब समशीतोष्ण एवं उष्णकटिबंधीय जलवायु में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

स्ट्राबेरी के प्रमुख रोग, कीट एवं उनका नियंत्रण:

कीटों में पतंगे, मक्खियाँ, चाफर, मक्खियां, स्ट्राबेरी जड़ विविल्स झरबेरी एक प्रकार का कीड़ा, रसभृग, स्ट्रॉबेरी मुकट कीट जैसे की टइस को नुकसान पंहुचा सकते है। इसके लिए नीम की खल पौधों की जड़ों में डाले इसके अलावा पत्तों पर पत्ती स्पाट, खस्ता फफूंदी, पत्ता ब्लाइट से प्रभावित हो सकती है। इसके लिए समय समय पर पोधों के रोगों की पहचान कर वैज्ञानिकों की सलाह में कीट नाशक दवाइयों का छिड़काव करे।

स्ट्रॉबेरी कीट नियंत्रण:

प्रारम्भिक प्रकोप होने पर प्रोफेनाफास 50 याडायमिथोएट 30 की 2 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड (178 एस.एल.) 0.3 मिली लीटर थायोमिथोग्जाम (25 डब्लूजी) 0.25 ग्राम लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

स्ट्रॉबेरी की खेती का आर्थिक दृष्टिकोण:

स्ट्रॉबेरी की खेती कम लागत और न्यूनतम रखरखाव में बहुत ज्यादा मुनाफे देनावाली फसल है। स्ट्राबेरी की खेती में लगने वाली लागत उसके फसल प्रबंधन पर निर्भर करती है वैसे औसतन स्थानीय या लोकल बाजार में स्ट्रॉबेरी का मूल्य 400–600 रुपए प्रति किलो तक मिल जाता है। स्ट्रॉबेरी की पैदावार प्रति हेक्टेयर 7 से 10 टन हो सकती है (1–1.5 किलो प्रति पौधा)। यदि 4,00,000 रू प्रति टन भी कीमत आंकी जावें तो फल बेचकर किसानों को प्रतिहेक्टर 28,00,000 रू का कूल अर्जन तथा तागत काटकर 5,00,000 रू. का शुद्ध लाभ प्राप्त होगा।

फलों की तुड़ाई एवं पैकिंग:

फलों को तोड़ने के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा माना जाता है फलों को सुबह के समय तोड़ने पर वे ताजा बने रहते हैं और फलों को तोड़ने के तुरन्त बाद उन्हे बाजार में पहुँचा देना चाहिए। जब फल का रंग 70 प्रतिशत असली हो जाये तो तोड़ लेना चाहिए। अगर बाजार दूरी पर है, तो थोड़ा सख्त ही तोडना चाहिए। तुड़ाई अलग अलग दिनों में करनी चाहिए। स्ट्रॉबेरी के फल को नहीं पकड़ना चाहिए। ऊपर से दण्डी पकड़ना चाहिए। औसत फल सात से बारह टन प्रति हेक्टयेर निकलता है। स्ट्रॉबेरी की पैकिंग प्लास्टिक की प्लेटों में करनी चाहिए। इसको हवादार जगह पर रखना चाहिए।